कृष्णराज सागर

क) कृष्णराज एक राजा का नाम था | मैसूर रियासत के महाराज कृष्णाराज वाडियार के एक अच्छे शासक |

ख) कृष्णराज – सागर कावेरी नदी पर बनवाया गया था | यह बाँध 30 फ़ीट ऊँचा है और इसमें 4800 करोड़ घन फ़ीट पानी इकट्ठा हो सकता है , जिससे लगभग 1,50,000 एकड़ खेती की सिंचाई की जा सकती है | इसके साथ ही यहाँ जल द्वारा बिजली पैदा करने स्टेशन भी बनाया गया | इससे कई कारखानों को चलाने के लिए बिजली तैयार की गई |

ग) कृष्णराज – सागर का निर्माण करने वाले इंजीनियर का नाम मोक्षगुंडम डॉ.विश्वेश्वरैया था |

घ)महाराज कृष्णराज ने मोक्षगुंडम डॉ.विश्वेश्वरैया को उलहाना दिया की आपने अपनी इंजीनियरिंग से दूसरों को तो लाभ पहुँचाया , परन्तु अपने राज्य को भुला ही दिया | आपका जन्म मैसूर में हुआ , परन्तु यहाँ की गरीबी को दूर करने का कभी कोई उपाय नहीं किया | इसका असर यह हुआ की डॉ.विश्वेश्वरैया ने अपनी सेवाएँ राज्य को समर्पित कर दी |

ड़) डॉ.विश्वेश्वरैया ने कहा की राज्य की उन्नति के लिए तकनीकी शिक्षा और उद्योग – धंधे के विकास की योजनाएँ बनाई जाएँ | जिससे राज्य का जनकल्याण हो |

च) अंग्रेज इंजीनियर कावेरी नदी पर बाँध बनाने से इसलिए कतराते थे क्यूँकि उनका मानना था कि कावेरी नदी पर बाँध कभी भी नहीं बन सकता है |

छ) डॉ.विश्वेश्वरैया जब बाँध बनाने में पूरी तरह से जुटे हुए थे तो उन्हें अनेक बाधाओं का सामना किया | बाँध बनते समय ही वर्षा ऋतु शुरू हो गई | वर्षा के कारण बहुत हानि उठानी पड़ी लेकिन उन्होंने दिन–रात काम किया बाँध के सामने ही अपना तम्बू गढ़वा दिया | पूरी लग्न के साथ काम करने के कारण बाँध समय पर तैयार हो गया |

ज) कृष्णराज – सागर के पास ही ' वृन्दावन गार्डन ' विश्व प्रिय दर्शनीय स्थान है | जो की एक उद्यान है |

झ)मोक्षगुंडम डॉ.विश्वेश्वरैया बहुत गरीब परिवार से सम्बन्ध रखते थे | उनके माता–पिता उन्हें शिक्षा नहीं दिलवा सकते थे | जब वे सात वर्ष के थे तो उनके पिता चल बसे | माँ ने उन्हें गाँव के स्कूल में ही डाल दिया | उन्होंने बाद में बेंगलुरु के सेंट्रल कॉलेज से अपनी शिक्षा प्राप्त की | मद्रास विश्वविद्यालय से बी.ए पास किया था | अपनी योग्यता और प्रतिभा के आधार पर पूना कॉलेज में प्रवेश पा लिया था |

10) अपनी योग्यता के अनुसार डॉ.विश्वेश्वरैया जी को मुंबई में लोकनिर्माण विभाग में नियुक्त किया गया | बाद में अंग्रेजों की नौकरी करना उन्हें सही नहीं लगा इसलिए उन्होंने उनकी नौकरी छोड़ दी | बाद में मैसूर के महाराज ने इन्हें अपने राज्य का दीवान बना दिया था |

ट) मोक्षगुंडम डॉ.विश्वेश्वरैया जी जने जीवन की पूर्ण शताब्दी समाप्त करने के बाद एक सौ एक वर्ष की आयु में 14 अप्रैल , 1962 के दिन अपने प्राण त्याग दिए |

ठ) भारत – सरकार ने सन 1955 को डॉ.विश्वेश्वरैया जी को भारत के सर्वोच्च अलंकार 'भारत – रत्न ' से अलंकृत किया था |